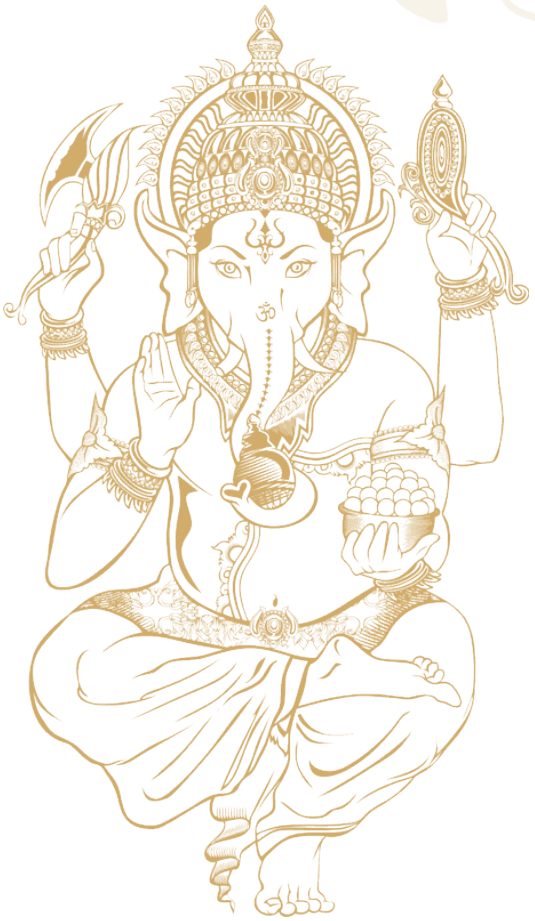

Gourav

25 Jan 2006

11:30 AM

Depalpur

Model: Baby-Horoscope

Order No: 121330301

तिथि 25/01/2006 **समय** 11:30:00 **वार** बुधवार **स्थान** Depalpur **चित्रपक्षीय अयनांश** : 23:56:29
अक्षांश 22:50:00 उत्तर **रेखांश** 75:33:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:27:48 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	19:19:50 घं
वेलान्तर	00:12:17 घं
सूर्योदय	07:09:46 घं
सूर्यास्त	18:10:38 घं
चैत्रादि संवत	2062
शक संवत	1927
मास	माघ
पक्ष	कृष्ण
तिथि	11
नक्षत्र	अनुराधा
योग	वृद्धि
करण	बव

अवकहड़ा चक्र

गण	देव
योनि	मृग
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	नू-नूर
पाया(रा.-न.)	लौह-ताम्र
होरा	मंगल
चौघड़िया	शुभ

विंशोत्तरी

शनि 6वर्ष 0मा 11दि

बुध

06/02/2012
05/02/2029

बुध	05/07/2014
केतु	02/07/2015
शुक्र	02/05/2018
सूर्य	08/03/2019
चन्द्र	07/08/2020
मंगल	04/08/2021
राहु	21/02/2024
गुरु	29/05/2026
शनि	05/02/2029

योगिनी

भ्रामरी 1वर्ष 3मा 7दि

संकटा

03/05/2025
03/05/2033

संकटा	12/02/2027
मंगला	04/05/2027
पिंगला	13/10/2027
धान्या	13/06/2028
भ्रामरी	03/05/2029
भद्रिका	13/06/2030
उल्का	13/10/2031
सिद्धा	03/05/2033

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			02:13:12	मेष	अश्विनी	1	केतु	शुक्र	---	0:00			
सूर्य			11:10:36	मक	श्रवण	1	चंद्र	मंगल	शत्रु राशि	1.52	ज्ञाति	पितृ	साधक
चंद्र			12:26:01	वृश्चि	अनुराधा	3	शनि	मंगल	नीच राशि	1.09	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			25:14:59	मेष	भरणी	4	शुक्र	बुध	स्वराशि	1.47	आत्मा	भ्रातृ	क्षेम
बुध		अ	10:03:28	मक	श्रवण	1	चंद्र	चंद्र	सम राशि	1.18	कलत्र	ज्ञाति	साधक
गुरु			22:41:39	तुला	विशाखा	1	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.03	भ्रातृ	धन	अतिमित्र
शुक्र	व		23:47:02	धनु	पूर्वाषाढ़ा	4	शुक्र	शनि	सम राशि	1.03	अमात्य	कलत्र	क्षेम
शनि	व		14:08:38	कर्क	पुष्य	4	शनि	राहु	शत्रु राशि	0.98	मातृ	आयु	जन्म
राहु	व		13:46:14	मीन	उ०भाद्रपद	4	शनि	राहु	सम राशि		---	ज्ञान	जन्म
केतु	व		13:46:14	कन्या	हस्त	2	चंद्र	राहु	शत्रु राशि		---	मोक्ष	साधक

लग्न-चलित

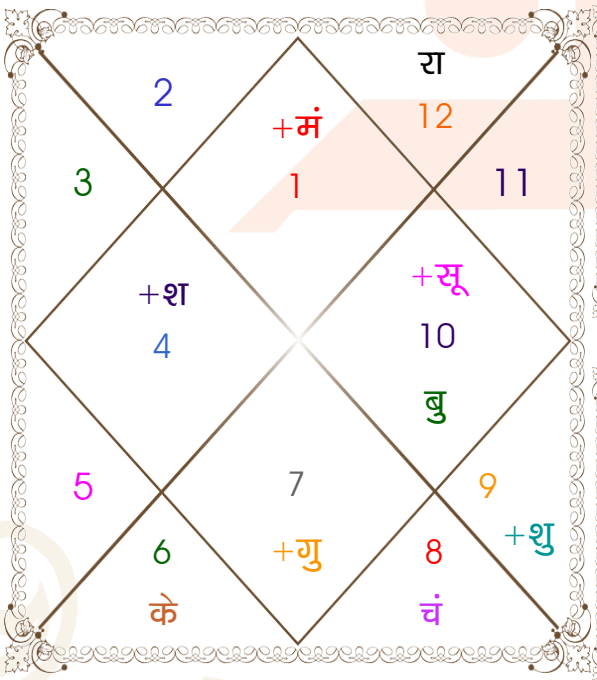

चन्द्र कुंडली

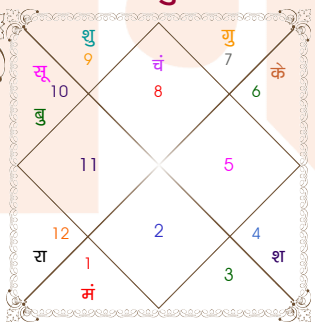

नवमांश कुंडली

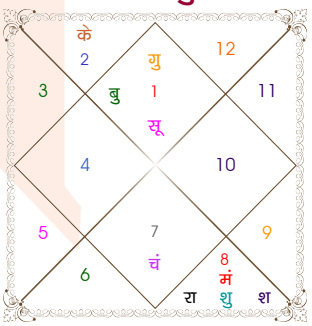

सर्वाष्टकवर्ग

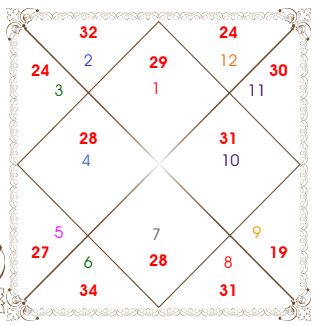

दशमांश कुंडली

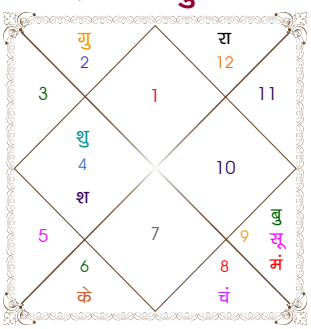

PT. Vishwas Dubey
HATOD DIST INDORE MP
9977779700

नक्षत्रफल

आप अनुराधा नक्षत्र के तृतीय चरण में उत्पन्न हुए हैं। अतः आपकी जन्मराशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, गण देव, नाड़ी मध्य, योनि मृग तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रारम्भ "नु" या "नू" अक्षर से होगा।

आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा परिश्रमपूर्वक अपने उद्यम संबंधी कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। आपका कार्यक्षेत्र विस्तृत रहेगा। अतः समय समय पर आप देश विदेश की यात्राएं भी सम्पन्न करेंगे। आप अपने बन्धुजनों तथा समीपस्थ सम्बन्धियों के प्रति अत्यन्त ही स्नेह एवं सहयोगी होंगे तथा इन लोगों की प्रत्येक कार्य के सफलता के लिए सदैव यत्नशील रहेंगे। इस प्रकार उनके हितकार्यों को करने पर आपको आत्मिक संतुष्टि प्राप्त होगी तथा हृदय भी हमेशा प्रसन्नता से युक्त रहेगा।

पुरूषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक पुरूषार्थी, प्रवासी, बन्धुओं के कार्य को करने में तत्पर तथा हमेशा प्रसन्नचित रहता है।

आप अपने सम्भाषण में सदैव मधुर एवं प्रिय वाणी का प्रयोग करेंगे। अतः अन्य लोग आपसे प्रसन्न तथा संतुष्ट रहेंगे। आप एक धनवान व्यक्ति होंगे तथा धन का आपको कभी भी अभाव नहीं रहेगा। आप समस्त भौतिक सुखसंसाधनों से सुसम्पन्न रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक इन सुखों का अपने जीवन में उपभोग करेंगे। आप अपने समाज में ख्याति प्राप्त या प्रसिद्ध व्यक्ति होंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि व्याप्त रहेगी। आप समाज के सभी लोगों के लिए पूज्य तथा सम्माननीय व्यक्ति होंगे। इसके अतिरिक्त नाना प्रकार के धनैश्वर्य से सुशोभित रहकर आप एक समर्थवान पुरूष होंगे।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक प्रिय तथा सुन्दर वाणी बोलने वाला, धनवान, सुखसंसाधनों में लिप्त रहने वाला, पूज्य, यशस्वी तथा सामर्थ्यवान व्यक्ति होता है।

आप एक धनाढ्य व्यक्ति होंगे तथा आपका अधिकांश समय घर से बाहर देश विदेश में निवास करके व्यतीत करेंगे। कभी कभी आप अपनी कार्य व्यस्तता या अन्य लौकिक हेतु से भूख से भी व्याकुल रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप भ्रमण प्रिय होंगे तथा पिकनिक आदि कार्यक्षेत्रों में अपना काफी समय व्यतीत करेंगे।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोऽनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, विदेश में वास करने वाला, भूख से व्याकुल रहने वाला तथा भ्रमण प्रिय होता है।

आपका शरीर तथा मुखमंडल हमेशा कान्ति से सुशोभित रहेगा। आपकी प्रवृति उत्सव प्रिय रहेगी। अतः समय समय पर पार्टी आदि कार्यक्रमों का आप आयोजन करते रहेंगे। शत्रुओं का दमन करने में आप हमेशा सक्षम रहेंगे तथा वे आपसे अत्यधिक भयभीत से रहेंगे। साथ ही नाना प्रकार की कलाओं के भी आप ज्ञाता होंगे तथा अपने जीवन काल में विविध एवं विस्तृत धनैश्वर्य का सुखपूर्वक उपभोग करेंगे।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आप लौहपाद में उत्पन्न हुए है। यद्यपि लौहपाद में उत्पन्न जातक सामान्य रूप से रोगी, दुःखी, धनाभाव से व्याकुल, सुखसंसाधनों से हीन तथा अन्य प्रकार के कष्टों से नित्य पीड्ति रहता हैं। किन्तु आपकी जन्म कुण्डली में चन्द्रमा शुभराशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह लौहपाद अशुभ की अपेक्षा शुभ ही अधिक रहेगा तथा विभिन्न प्रकार के शुभ फलों की आपको आजीवन प्राप्ति होती रहेगी। आप एक तेजस्वी तथा बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा धन सम्पत्ति से प्रायः सुसम्पन्न रहेंगे। आपकी आयु भी पूर्ण होगी तथा जीवन में आवश्यक सुख साधनों को अर्जन करने में आप सफल रहेंगे तथा सुखपूर्वक इनका उपभोग भी करेंगे। लेकिन स्वास्थ्य की दृष्टि से आप मध्यम रहेंगे तथा यदा कदा श्वास आदि रोगों से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। इस प्रकार आपका सांसारिक जीवन सामान्यतया प्रसन्नतापूर्वक ही व्यतीत होगा।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका सीना विशाल तथा आँखें बड़ी बड़ी होंगी। साथ ही शरीर में तनिक श्यामलता दृष्टिगोचर होगी। आपके हाथ या पैर में मत्स्यादि का चिन्ह भी होगा तथा हाथ की रेखाएं पक्षी एवं वज्र के समान आकृति वाली होगी। आपको अपने श्रेष्ठ जनों का सहयोग अल्प मात्रा में प्राप्त होगा तथा इनसे संबंध भी अल्प ही रहेंगे। बचपन में आप काफी बीमार भी रहेंगे। बुद्धि से आप अत्यन्त चतुर तथा तीव्र होंगे अतः राज्य या सरकार में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपके समस्त कार्य क्रूरतापूर्ण तथा कठोरता से सम्पन्न होंगे। अतः आप सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों के अधिकारी बनेंगे। कभी कभी आप अपनी दुष्टता का भी परिचय देंगे इससे कई लोग आपके द्वारा

दुःख प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आप गुप्त रूप से कठोरकर्म करेंगे या प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से उसमें सम्मिलित रहेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आपका उदरभाग तथा मस्तक भी आकार में विस्तृत रहेगा। आपके मन में अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति हमेशा लोलुपता का भाव विद्यमान रहेगा। आपके शरीर में लावण्यता या कोमलता का समावेश रहेगा। आप ईश्वर एवं धर्म के प्रति अल्प मात्रा में ही आस्था प्रकट करेंगे। आपकी दाढी तथा नाखूनों में चोटादि के भी चिन्ह विद्यमान रहेंगे। धन धान्य एवं ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर जीवन में आप सुखपूर्वक इसका उपभोग करेंगे। विभिन्न प्रकार के कार्यों को करने में आप दक्ष होंगे तथा नित्य कुछ न कुछ कार्य करते रहेगे। बन्धु वर्ग से सहयोग आप को नाम मात्र का ही मिलेगा। आप एक पराक्रमी पुरूष होंगे तथा समस्त सामाजिक जन आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं हृदय से आपको यथोचित सम्मान प्रदान करेंगे। आपका स्वभाव भी उग्रता से युक्त रहेगा एवं समाज में अन्य जनों में भी आपकी अनुरक्ति रहेगी। इसके साथ ही सरकार के द्वारा आप धन हानि को भी प्राप्त करेंगे।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप जीवन में विपुल धन के स्वामी बनेंगे तथा कुटुम्बी जनों के अतिरिक्त अन्य कई जनों को भी आपके द्वारा सुख की प्राप्ति होगी। स्त्रियों के विषय में आप सौभाग्यवान पुरूष होंगे तथा इनसे पूर्ण आदर, सम्मान, सहयोग तथा लाभ अर्जित करेंगे। साथ ही सरकारी सेवा में भी आपकी नियुक्ति हो सकेगी। दूसरे के धन को प्राप्त करने की इच्छा आपके मन में रहेगी तथा इसके लिए आप हमेशा प्रयत्नशील रहेंगे। आप अत्यन्त ही दृढ़मति के व्यक्ति रहेंगे तथा जिस किसी कार्य के विषय में एक बार सोच लेंगे उसे हमेशा पूर्ण करके ही रहेंगे। साथ ही आप साहसी शूरवीर तथा निर्भय पुरूष भी होंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

जीवन में यदा कदा आप जुआ आदि खेल को भी खेलने की इच्छा करेंगे परन्तु इस सब में आपको अधिक मात्रा में आर्थिक हानि ही होगी। इसके अतिरिक्त उग्रस्वभाव होने के कारण आपकी प्रवृति विवाद युक्त होगी तथा अन्य जनों से आपका विवाद चलता रहेगा।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बचपन से ही इधर उधर भ्रमण करने के प्रिय रहेंगे। आप में अभिमान की भावना भी विद्यमान रहेगी तथा समय समय पर अन्य जनों के समक्ष इसका प्रदर्शन करते रहेंगे। अपने स्वजनों के प्रति आपके मन में स्नेह तथा सहानुभूति रहेगी। साथ ही अपने साहस तथा पराक्रम से धनार्जन करने में पूर्ण रूपेण सक्षम रहेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

देवगण में पैदा होने के कारण आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुरवाणी बोलने वाले होंगे। साथ ही आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरल होगी। आपकी मुख्य विशेषता यह रहेगी कि अपनी बातों का प्रस्तुतीकरण आप सुगमतापूर्ण ढंग से करेंगे तथा अन्य जनों के विचारों को भी सरलता से ग्रहण करेंगे। आप हमेशा अल्प मात्रा में सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। अन्य लोगों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी श्रेष्ठ पुरूषों द्वारा प्रतिपादित उत्तम गुणों से युक्त रहेंगे। इसके अतिरिक्त धन धान्य ऐश्वर्य एवं वैभव का भी आपको जीवन में अभाव नहीं रहेगा तथा सुखपूर्वक इसका उपभोग करने में सफल रहेंगे।

आपका सौन्दर्य दर्शनीय होगा तथा दानशीलता की प्रवृति भी आप में विद्यमान रहेगी जिसका प्रदर्शन आप समयानुसार करते रहेंगे। आप एक बुद्धिमान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करना उपयुक्त समझेंगे। साथ ही आप एक विद्वान के रूप में समाज में प्रसिद्ध तथा सम्माननीय रहेंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे डणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मृग योनि में पैदा होने के कारण आप स्वच्छन्द प्रवृति के व्यक्ति होंगे तथा बिना

किसी हस्तक्षेप के अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करना श्रेष्ठ समझेंगे। आपका मन शान्त होगा तथा झगड़ा आदि करने की प्रवृति आपके मन में नहीं रहेगी। साथ ही आपकी आजीविका सद्कार्यों के द्वारा सम्पन्न होगी। आप एक सत्यवादी व्यक्ति होंगे तथा धर्म के प्रति आपका पूर्ण विश्वास एवं श्रद्धाभाव रहेगा। साथ ही इसका नियमपूर्वक पालन करने में भी आप प्रयत्नशील रहेंगे। आपका स्वजनों के प्रति अत्यन्त ही स्नेहशील व्यवहार रहेगा एवं उनका यत्नपूर्वक हमेशा हितसाधन करने में रत रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप एक बहादुर व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव स्थापित रहेगा।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

आपके जन्म काल में सूर्य दशम भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा एवं आयु भी दीर्घ होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगे एवं जीवन के अधिकांश महत्वपूर्ण क्षेत्रों में आपकी उन्नति के लिए अपना पूर्ण आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करेंगे। साथ ही व्यापार तथा आजीविका संबंधी कार्यों में भी उन्हीं की प्रेरणा एवं सहयोग से आप सफलता अर्जित कर सकेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण श्रद्धा एवं सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे परन्तु वे शीघ्र ही समाप्त हो जाएंगे। इसके साथ ही आप जीवन में उनको आर्थिक तथा अन्य रूप से पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में उनको पूर्ण सहायता तथा सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का

स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आथिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, षष्ठी, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यतिपात योग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फलदाता रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य 1,6,11 तिथियों, रेवती नक्षत्र व्यतिपातयोग तथा गरकरण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण एवं शुभ कार्यों को सम्पन्न न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक होगी। साथ ही शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशि के चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में त्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी सावधान रहना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या प्रोन्नति में बाधा आदि अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता नहीं मिल रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट देव शिव का पूजन करना चाहिए तथा नित्य प्रातः शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए एवं सोमवार तथा वृहस्पतिवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही सोना, मूंगा, रक्त वस्त्र, रक्त पुष्प, रक्त चन्दन, गेंहू, तांबा आदि पदार्थो का किसी सुपात्र को श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए तथा मंगल के तांत्रीय मंत्र के किसी योग्य विद्वान के द्वारा कम से कम 7000 जप करवाने चाहिए। इससे आपको मन की शान्ति मिलेगी तथा अन्य अनिष्ट फल भी कम होंगे।

ॐ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र- ऊं हुँ थीं भौमाय नमः।